Bihar Board Class 6 Hindi Notes Chapter 12 रहीम के दोहे

रहीम के दोहे Summary in Hindi

अर्थ-लेखन

1. जो रहीम उत्तम-प्रकृति ..... लपटे रहत भुजंग।

अर्थ – रहीम कवी के अनुसार जो व्यक्ति उत्तम स्वभाव का है उसको खराब व्यक्ति की संगति से कुछ भी दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। जैसे – चंदन के पेड़ में साँप लिपटा रहता है लेकिन चन्दन पर उस साँप के विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

2. रहीम निज-मन की ..... बाँटि न.लैहे कोय॥

अर्थ – रहीम कवि कहते हैं कि अपने मन के दख को मन में समेटे रहो क्योंकि अन्य लोग तुम्हारे दुख को सुनकर केवल तुम्हारा उपहास ही करेंगे। कोई भी तुम्हारे दुख को बाँट नहीं सकता है।

3. रहीमन धागा प्रेम ..... गाँठ परि जाय॥

अर्थ – रहीम कवि का कहना है कि प्रेम रूपी धागा को आसानी से तोड़ने की कोशिश मत करो। क्योंकि प्रेम टूट जाने पर नहीं जुड़ता यदि जुड़ता भी तो उसमें गाँठ पर जाता है। जैसे टुटे धागा को जोड़ने पर गाँठ पड़ जाता है।

4. तरुवर फल नहिं ..... सँचहिं सुजान।

अर्थ – वृक्ष अपना फल नहीं खाता, सरोवर अपना पानी नहीं पीता है. उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति अपन धन संचय परोपकार के लिए करते हैं।

5. रहीम देखि बड़ेन ..... कहा करै तरवारि ॥

अर्थ – रहीम कवि कहते हैं बड़े व्यक्ति या महान कार्य को पाकर छोटे को मत त्याग कीजिए । क्योंकि जहाँ सुई काम आने वाला है वहाँ तलवार कुछ नहीं कर सकती है।

6. रहीमन वे नर मर ..... मुख निकसत नाहिं।

अर्थ – रहीम कवि कहते हैं वह व्यक्ति मरा होता है जो किसी से कुछ
माँगता है लेकिन उससे भी पहले वह मर जाता है जिसके मुख से याचक के लिए नहीं निकलता है।

7. यो रहीम सुख ..... मेंहदी का रंग।

अर्थ – उपकारी व्यक्ति की संगति भी लाभकारी होती है क्योंकि जो मेंहदी बाँटता है या दूसरे के हाथ में मेंहदी लगाता है उसका भी हाथ मेंहदी के रंग में रंग जाता है। अर्थात् परोपकार करने वाले का स्वयं उपकृत हो जाता है।

https://www.evidyarthi.in/

8. कारज धीरे ..... केतक सींचो नीर ॥

अर्थ – मनुष्य को अपने कर्म के प्रति अधौर नहीं होना चाहिए अर्थात धैर्य नहीं खोना चाहिए क्योंकि सब काम समय पर ही होता है। जैसे-पेड़ समय .. पर ही फलता है चाहे हम उसको कितना ही क्यों न सींचें।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/